भावार्थ पाठ 4 - 'उत्साह' तथा 'अट नहीं रही है' (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला) कक्षा 10 हिंदी

अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

'उत्साह'

काव्यांश 1

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधार ओ!
ललित ललित ,काले धुंघराले ,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज छिपा ,नूतन कविता
फिर भर दो बादल गरजो!

भावार्थ

कवि बादलों को संबोधित करते हुए कहता है-लोगों के मन को सुख से भर देने वाले बादलों, आकाश को घेर-घेर कर खूब गरजो। तुम्हारे सुंदर बाल (केश) काले एवं घुंघराले हैं। ये कल्पना के विस्तार के समान घने हैं अर्थात् काले एवं सघम बादल अत्यंत दूर-दूर तक समूचे क्षितिज पर फैले हुए हैं। कवि 'निराला' बादलों को कवि के रूप में व्याख्यायित करते हुए कहते हैं तुम्हारे हृदय में बिजली की चमक है। जैसे बादल वर्षा करके सभी को नया जीवन प्रदान करते हैं, पीड़ित- प्यासे जन की इच्छा पूरी करते हैं, उसी प्रकार तुम (कवि) भी संसार को नया जीवन देने वाले हो। जिस प्रकार बादलों में वज्र छिपा है, उसी प्रकार तुम (कवि) भी अपनी नई कविता में अथवा भावनाओं में वज्र छिपाकर नवीन सृष्टि का निर्माण करो अर्थात् समूचे संसार को जोश से भर दो।

Online Teaching With Nikita
STUDY SMART BE BRIGHT

भावार्थ पाठ 4 - 'उत्साह' तथा 'अट नहीं रही है'

(सूर्यकांत त्रिपाठी निराला) कक्षा 10 हिंदी

अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 2

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो— बादल गरजो!

भावार्थ

कवि कहता है कि चारों ओर वातावरण में बेचैनी व्याप्त थी, लोगों के मन भी दु.खी थे, इसलिए वह बादलों को कहता है-लोगों के मन को सुख से भर देने वाले बादलों! आकाश को घर-घर कर गरजो।

संसार के सभी प्राणी भयंकर गर्मी के कारण बेचैन और उदास हो रहे हैं। आकाश की अज्ञात (अनजान) दिशा से आए हुए घने बादलों! तुम बरसकर गर्मी से तपती धरती को फिर से ठंडा करके लोगों को सुखी कर दो।

निराला

Online Teaching With Nikita

STUDY SMART BE BRIGHT

भावार्थ पाठ 4 - 'उत्साह' तथा 'अट नहीं रही है'

(सूर्यकांत त्रिपाठी निराला) कक्षा 10 हिंदी

अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

'अट नहीं रही है'

काव्यांश 3

अट नहीं रही है
अट नहीं रही है
आशा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।

भावार्थ

प्रस्तुत कविता में फागुन के अदावेनीय सौंदर्य का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि चारों ओर फागुन की शोभा संमा नहीं पा रही है। फागुन की शोभा तन में समा नहीं पा रही है। इस समय चारों ओर फूल खिलते हैं, तुम साँस लेते हो, उस साँस से तुम संपूर्ण प्रकृति को खुश करते भर देते हो। वह सुगंध वातावरण में फैलकर हर घर को खुशी से भर देती है। यह सब देखकर मन प्रसन्न हो उठता है और आकाश में उड़ना चाहता है। इस वातावरण में पक्षी भी पंख फैलाकर आकाश में उड़ना चाहते हैं। फागुन का यह दृश्य इतना सुहावना है कि यदि मैं इन सबसे आँख हटाता भी चाहूँ तो हटा नहीं पाता हूँ। इस समय डालियाँ कहीं लाल, तो कहीं हरे पत्तों से लदी हुई हैं। इन सबको देखकर ऐसा लग रहा मानो फागुन के गले में सुगांध से मस्त कर देने वाली फूलों की माला पड़ी हुई है। इस प्रकार जगह-जगह फागुन का सौंदर्य बिखरा हुआ है कि वह सौंदर्य समा नहीं पा रहा है।

Online Teaching With Nikita

STUDY SMART BE BRIGHT